# अपरा एकादशी — चयनित पूर्ण उपदेश का पुनर्कथन

Apara Ekadashi — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Padma Purana chapter 50, exact controlling revision 336431. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling archived wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 50 — complete electronic comparison, not independent print collation; Wisdomlib / N. A. Deshpande English chapter 50 — complete comparison only; modern prose not copied; Sanskrit Wikisource rightsinfo API — checked CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.50.1–20, Sanskrit Wikisource revision 336431, not a transcription of the original text.

## नाम, आचरण और उत्तरदायित्व

KATHA 6.50.1–10

युधिष्ठिर जनार्दन से ज्येष्ठ के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम और माहात्म्य सुनना चाहते हैं। कृष्ण लोगों के हित के लिए किये गये प्रश्न की प्रशंसा करते हैं और एकादशी का नाम अपरा बताते हैं। वे इसे बहुत पुण्य देने वाली, बड़े पाप नष्ट करने वाली, पुत्र देने वाली और लोक में प्रसिद्धि से जुड़ी कहते हैं। चयनित संस्कृत में पुत्र का उल्लेख है; तुलना के अंग्रेजी पाठ में इसके स्थान पर अनन्त फल है। कोई संतान या प्रसिद्धि की गारंटी नहीं है।

आगे ब्राह्मण-हत्या, परिवार का विनाश, भ्रूण-हत्या, परनिंदा और दूसरे की पत्नी में रुचि जैसे कर्म गिनाये गये हैं। झूठी गवाही, गलत नाप और तराजू, वेद-शास्त्र के नाम पर छल, छलपूर्ण ज्योतिष या गणना और चिकित्सकीय धोखे की भी निंदा है। इन्हें नरक तथा पाप से जोड़ा गया है और अपरा के पालन को उस पाप से छुटकारे की धार्मिक प्रशंसा दी गयी है।

कृष्ण युद्ध से हटकर अपने क्षात्रधर्म को छोड़ने वाले क्षत्रिय तथा अपने गुरु की निंदा करने वाले विद्वान शिष्य का उल्लेख करते हैं। उनके लिए भी भयावह नरक और अपरा से सद्गति का दावा आता है। ये प्राचीन नैतिक और सामाजिक धारणाएँ हैं, आधुनिक चिकित्सा, प्रजनन-स्वास्थ्य, युद्ध में भाग लेने या किसी गुरु की आलोचना पर सार्वभौमिक निर्णय नहीं। प्रश्न करना, दुर्व्यवहार की शिकायत और सुरक्षित उपचार लेना अनुचित नहीं है। प्रार्थना हानि रोकने, जवाबदेही, न्याय और सुधार का विकल्प नहीं बनती।

Yudhishthira asks Janardana about the name and significance of Jyeshtha's dark-fortnight Ekadashi. Krishna praises the question as seeking people's welfare and names Apara. He associates it with abundant merit, destruction of grave sins, a son and worldly renown. The selected Sanskrit mentions a son; the English comparison instead speaks of unending fruit. Neither offspring nor fame is guaranteed.

The discourse names killing a Brahmin, destroying one's family, killing an embryo, disparagement and desire for another person's wife. It also condemns false testimony, dishonest measures and scales, deception involving Vedas or scriptures, fraudulent astrology or calculation and medical fraud. These are associated with sin and hell, while observance of Apara is religiously praised as release from sin.

Krishna then mentions a warrior abandoning his prescribed martial duty by leaving battle and a learned pupil disparaging a teacher. Fearful hell and deliverance through Apara are again invoked. These are ancient moral and social categories, not universal modern judgments about medicine, reproductive healthcare, participation in war or criticism of a teacher. Asking questions, reporting abuse and obtaining safe treatment are not wrongdoing. Prayer is no substitute for stopping harm, accountability, justice and repair.

## पूरी तीर्थ और दान तुलना

KATHA 6.50.11–16

कृष्ण अपरा का माहात्म्य आगे तीर्थों की तुलना से कहते हैं। माघ में सूर्य के मकर राशि में होने पर प्रयाग का पुण्य, ग्रहण में काशी-स्नान, गया में पिंडदान से पितरों की तृप्ति, गुरु के सिंह में होने पर गौतमी-स्नान और कन्या में होने पर कृष्णवेणी-स्नान का उल्लेख है।

कुम्भकेदार-दर्शन, बदरी-आश्रम की यात्रा और तीर्थ-सेवन, सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र तथा हाथी, घोड़ा और स्वर्ण देने और दक्षिणा सहित यज्ञ के फल से भी अपरा की तुलना है। आगे प्रसव से जुड़ी अवस्था वाली गाय, स्वर्ण और भूमि का दान आता है। संस्कृत की गाय-संबंधी स्थिति को तुलना का अंग्रेजी पाठ हाल में ब्यायी गाय कहता है; इस पुनर्कथा में उससे पशु-व्यवहार की विधि नहीं निकाली गयी।

इन स्थानों, ग्रह-स्थितियों और दानों का उल्लेख अध्याय की पुण्य-तुलना है, वर्तमान यात्रा-कैलेंडर, ज्योतिषीय गणना, ग्रहण-स्नान का सुरक्षित समय या पशु-दान का निर्देश नहीं। कुम्भकेदार को यहाँ किसी नये आधुनिक आयोजन की तारीख नहीं दी जाती। यात्रा, खरीद, दान या जोखिमपूर्ण जल-प्रवेश के बिना भी अध्याय पढ़ा जा सकता है।

Krishna continues with comparisons to sacred journeys and observances. He mentions merit at Prayaga in Magha when the Sun is in Makara, bathing at Kashi during an eclipse, ancestral satisfaction through offerings at Gaya, bathing in Gautami when Jupiter is in Simha and in Krishnaveni when Jupiter is in Kanya.

Apara is also compared with Kumbhakedara sight, visiting Badari's hermitage and its sacred places, Kurukshetra during a solar eclipse, elephant, horse and gold gifts, and sacrifice with accompanying gifts. The discussion then mentions a cow in a condition related to parturition, gold and land. The English comparison calls the cow recently calved; this retelling does not turn the Sanskrit wording into an animal-handling procedure.

These places, planetary positions and gifts form the chapter's devotional comparisons, not a current travel calendar, astrological calculation, safe eclipse-bathing time or animal-gift instruction. Kumbhakedara is not assigned a new modern event date here. Reading requires no journey, purchase, gift or risky entry into water.

## रूपक, त्रिविक्रम और पूर्ण समापन

KATHA 6.50.17–20

कृष्ण फिर अपरा को पापरूपी वृक्ष के लिए कुल्हाड़ी, पापरूपी ईंधन के लिए वन-अग्नि, अंधकार के लिए सूर्य और मृग के लिए सिंह कहते हैं। ये पाप-क्षय की काव्यात्मक तुलनाएँ हैं। आगे एकादशी-व्रत के बिना जीवन की नश्वरता को पानी के बुलबुले और छोटे जीवों के रूपक से कहा गया है। यह उपवास न करने वालों के जीवन को व्यर्थ या कम मूल्यवान मानने का आधार नहीं है।

अपरा में उपवास और त्रिविक्रम की पूजा करने को पाप से मुक्ति तथा विष्णुलोक में सम्मान से जोड़ा जाता है। कृष्ण कहते हैं कि उन्होंने लोकहित के लिए यह माहात्म्य सुनाया है। पढ़ने और सुनने का फल हजार गायों के दान के समान बताया गया है। इसके बाद अध्याय 50 का अलग समापन-वाक्य उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में ज्येष्ठ कृष्ण अपरा एकादशी को नाम देता है। तत्काल प्रश्नोत्तर कृष्ण–युधिष्ठिर का है; इन दो स्तरों को न मिलाएँ।

पूरा चयनित अध्याय उपदेश है। इसमें महिध्वज, वज्रध्वज या धौम्य की लोकप्रिय पात्र-कथा नहीं है। किसी व्यक्ति की गरिमा, स्वास्थ्य, संतान या न्याय को धार्मिक फल से न मापें। भोजन, पानी और आवश्यक उपचार उपलब्ध रखें; इस पाठ के लिए उपवास या गोदान जरूरी नहीं है और प्रार्थना हानि के वास्तविक परिणाम नहीं मिटाती।

Krishna portrays Apara as an axe against the tree of sin, forest fire against its fuel, sunlight against its darkness and a lion against its deer. These are poetic images of release from sin. Life without the Ekadashi vow is then compared with transient water-bubbles and small creatures. This is not a reason to call the lives of non-fasting people worthless or less valuable.

Fasting on Apara and worship of Trivikrama are associated with release from sin and honour in Vishnu's world. Krishna says he has narrated its significance for people's welfare. Reading and hearing are praised as equal to giving a thousand cows. A separate chapter-50 colophon names Jyeshtha's dark Apara within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue. The immediate exchange remains Krishna–Yudhishthira; those two levels are kept distinct.

The complete selected chapter is teaching, not the popular character story of Mahidhvaja, Vajradhvaja or Dhoumya. Do not measure dignity, health, offspring or justice by devotional rewards. Food, water and necessary treatment remain available; reading requires no fast or cow gift, and prayer does not erase the real consequences of harm.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Apara Ekadashi — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.50.1–20, revision 336431, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. This notice applies to the retelling and language layers, not unrelated site content or code. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.